आर्टरी क्लियरेंस चिकित्सा (एसीटी)

हमारे शरीर में दो भिन्न प्रणालियों द्वारा, शरीर के प्रत्येक भाग में रक्तापूर्ति होती है। हमारी धमनियां हृदय से पौष्टिक और ऑक्सीजनयुक्त रक्त लेकर शरीर के विभिन्न अवयवों में पहुँचाती हैं, तो शिरायें उपयोग हो चुके रक्त को पुन: शरीर से हृदय की और लाती हैं। ऑक्सीजन रहित रक्त के हृदय में वापस जाने पर ही यह चक्र पूर्ण होता है।

दुर्भाग्यवश, हमारे भोजन, जल और वायु आपूर्ति की प्रक्रिया में जीव विष भी हमारे रक्त में घुल जाता है, जिससे जैविकीय प्रतिक्रियाएं (मुक्त रैडिकल क्षति) होती हैं। परिणामस्वरूप, धमनी की झिल्ली पर परत-सी बन जाती है। ऐसे में अधिक क्षति वहां होती है, जहां धमनियों की शाखाएं बनती हैं। जैसे-गले (कैरोटिड्स) हृदय (कोरोनरी) पैरों (फेमोरल) और ट्रक (अरोटा) में। धमनी की झिल्ली खराब होने पर चर्बी, भारी धातू, क्लॉट बनाने वाले तत्व तथा रक्तकण इत्यादि उस पर चिपक जाते हैं। प्राकृतिक रूप से इस स्थिति को सुधारने की प्रक्रिया में, शरीर फाइब्रोस तत्व (कॉलसेन, इलास्टिक और ग्लाईकोसेमिंगलीकैन्स) युक्त परत बनाने का प्रयास करता है, जिससे धमनी संकरी हो जाती है। इस स्थिति को एथेरोस्कलेरोसिस कहते हैं। 40 वर्ष से अधिक उम्र वाले अधिकतम लोगों में यह स्थिति मिलती है। यह समस्या मात्र धमनियों में होती है शिराओं में नहीं, क्योंकि शिराओं तक पहुँचने से पर्व ही रक्त में से ऑक्सीजन समाप्त हो जाता है। ऑक्सीजन ही ऑक्सीडाईस अथवा चर्बी का कारण होता है।

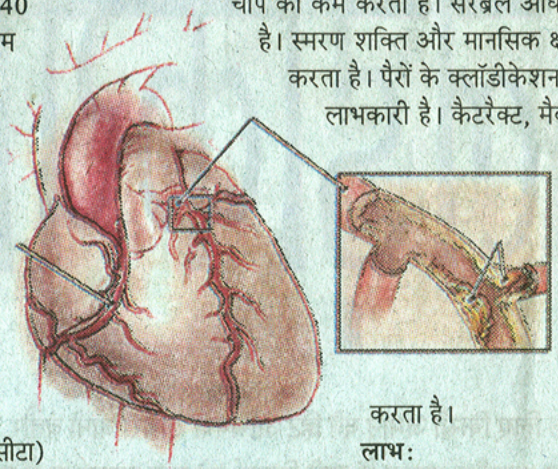

आर्टरी क्लीयरेंस थेरेपी से नलिकाओं को खोलना;

आर्टरी क्लीयरेंस थेरेपी (एसीटा) या एक्ट के तहत सप्ताह में 2-3 दिन अंट्रावेन्स ड्रिप मेडिकेशन दिया जाता है, जो 3 घण्टे में रक्त-प्रवाह को सामान्य बनाने के लिये एथेरोमा को धीरे-धीरे घुलाता है तथा पूरे शरीर में रक्त-प्रवाह को सुधारता है। यह एंजिना के दर्द और उच्च रक्त-चाप को कम करता है। सेरेब्रल आघात में उपयोगी है। स्मरण शक्ति और मानसिक क्षमता में इजाफ़ा करता है। पैरों के क्लॉडीकेशन दर्द में लाभकारी है। कैटरैक्ट, मैक्यूलर डीजेनरेशन और डायबेटिक रेटिनोपेथी की प्रक्रिया को धीमा करता है। त्वचा के रंग को साफ़ करता है।

लाभ:

शल्य-चिकित्सा के बिना रोग-उपचार होता है। उपचार के दौरान बैठ कर तथा पश्चात सामान्य रूप से कार्य किया जा सकता है। सुरक्षित, दर्दरहित तथा बाई पास सर्जरी की तुलना में बेहतर एवं अधिक समय तक लाभकारी उपचार है।

इस उपचार में दवाओं के दुष्परिणाम, कोशिका जलन, दर्द, सरदर्द, थकावट और ब्लड शुगर में परिवर्तन जैसी प्रतिक्रियाओं की संभावना नहीं रहती। यदि किसी प्रकार की प्रतिक्रिया हो भी जाये तो कम समय में और सरलतापूर्वक उसे नियंत्रित किया जा सकता है। एसीटी का उपयोग एंजियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी के पश्चात रिब्लॉक हो जाने पर उसके उपचार हेतु भी किया जाता है। कभी-कभी हृदयघात को रोक भी देता है। 40 वर्ष से अधिक वय वालों के लिये अत्याधिक उपयोगी है तथा ऐजियोप्लास्टी और बाईपास के मुकाबले सुरक्षित और किफ़ायती भी है।

एसीटी उपचार और इसमें उपयोग होने वाली औषधियां संवैधानिक और एफडीए द्वारा अनुमोदित हैं तथा इंग्लैंड में राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाएं द्वारा मान्यता प्राप्त है एवं अमेरिकन कॉलेज ऑफ एडवांसमेंट इन मेडिसन द्वारा सुझावित किया गया है।

चेलेशन चिकित्सा

शरीर में बड़े से छोटे कैपिलरीस और आर्टीरियोल्स, जो अत्यंत छोटे एवं मस्तिष्क के भीतर गहराई में होते हैं तथा जहाँ तक शल्य-चिकित्सा के माध्यम से सुरक्षित रूप से नहीं पहुँचा जा सकता। ऐसे स्थानों पर भी रक्त-प्रवाह को सामान्य बनाने में लाभदायक है, चेलेशन चिकित्सा। कई रोगियों में संकरी रक्त कोशिकाएं अत्यंत गंभीर रोग है, विशेषकर मधुमेह की स्थिति में। ऐसी स्थिति में चेलेशन पद्धति द्वारा रोगी का उपचार सिर से पांव तक एक साथ होता है, जबकि शल्य-चिकित्सा का प्रभाव मात्र आर्टीरिस के उपचारित हिस्से में ही होता है।

चेलेशन चिकित्सा के पश्चात् एंजिना की समस्या को नियमित रूप से ठीक किया जाता है, जिससे थोड़ी ही दूर चलने पर छाती और पैरों में दर्द से पीड़ित होने वाले रोगी भी सामान्य हो जाते हैं। इतना ही नहीं इस चिकित्सा से कुछ सप्ताह में ही मधुमेह, अल्सर और गैन्ग्रीन जैसे रोगों में भी सुधार होता है। कुछ गैन्ग्रीन के रोगियों में तो प्रभावित अंग को काटने की नौबत आ गई थी, किंतु चेलेशन थेरेपी से उनमें काफी सुधार आया है।

किनके लिये उपयोगी है, चेलेशन थेरेपी:

दिन भर के कार्य करने के पश्चात तनाव और थकान महसूस हो, उच्च रक्तचाप होने पर, अधिक चर्बी होने पर, मधुमेह से पीड़ित होने पर, धूम्रपान करने वालों को, मोटे व्यक्तियों के लिये, तनावयुक्त एवं अत्यधिक व्यस्त होने पर तथा 30 वर्ष से अधिक वय वाले लोगों के लिये।

जिन्हें अत्यंत आवश्यकता है;

जिन्हें एंजिना अथवा हृदयाघात हो चुका हो, जिन्हें एंजियोग्राफी या ब्लॉकेज हों और एंजियोप्लास्टी या बाईपास की सलाह दी गई हो तथा जिन्हें घात की पुनरावृत्ति होने से रोकने के लिये बाईपास एवं एंजियोप्लास्टी की गई हो।

लाभ:

कार्डियोवास्क्युलर में सुधार, कार्यक्षमता में वृद्धि, छाती दर्द एवं श्वास समस्याओं के लक्षणों में सुधार तथा कार्डियाक आपातकाल से बचाव।

इसके अतिरिक्त यह थेरेपी अत्यन्त महंगी शल्य-चिकित्सा के मुकाबले काफी सस्ती भी है।

चेलेशन-चिकित्सा अपनाने का फैसला केवल आपको करना है, ना कि आपके चिकित्सक को। कभी-कभी तो अस्पताल पहुँच जाने पर रोगी इस थेरेपी को अपनाते हैं, और वह भी किसी ऐसे मित्र या संबंधी की सलाह पर, जिसने इस चिकित्सा से लाभ उठाया हो। इस थेरेपी का लाभ, असफल बाईपास सर्ज़रियों के बाद भी हुआ है।

- डॉ. प्रवीण कुमार सक्सेना
डॉ. सक्सेना प्रीवेंटिव कार्डियाक सेंटर
दूरभाष : 55752014/9849017813